Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

उप विषय :- मध्य प्रदेश में NEP 2020 के सन्दर्भ में आधुनिक विद्यालयीन पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोधार्थी :- नीतू चौधरी
शोध संस्था :- शिक्षा अध्ययन शाला सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय उज्जैन
शोध निर्देशक :- **डॉ. राजीव पंड्या** प्राचार्य शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन

1. सारांश

मध्यक्षेत्रे नवोन्मेषः राष्ट्रशिक्षाप्रकल्पना।
पुरातनस्य बोधेन भविष्यं निर्मितं शुभम्॥"

अर्थात मध्य प्रदेश में नई शिक्षा नीति की कल्पना से नया उत्साह आया है। प्राचीन ज्ञान के बोध से एक शुभ भविष्य का निर्माण हो रहा है।

यह शोध पत्र मध्य प्रदेश के शैक्षिक परिदृश्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन और भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश का विश्लेषण करता है। मध्य प्रदेश देश के उन अग्रणी राज्यों में से एक है जिसने NEP 2020 को प्राथमिक और उच्च शिक्षा स्तर पर लागू किया है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार आधुनिक नीतिगत ढांचे के भीतर प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धतियों (जैसे समग्र विकास, नैतिक शिक्षा और मातृभाषा) को पुनर्जीवित किया जा रहा है।

शोध के उद्देश्य :-

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि मध्य प्रदेश के स्कूली पाठ्यक्रमों में प्राचीन भारतीय विज्ञान, गणित, भाषा और नैतिक मूल्यों को किस प्रकार स्थान दिया जा रहा है। साथ ही, यह शोध शिक्षकों की तैयारी और छात्रों के सीखने के परिणामों (Learning Outcomes) पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन करने का प्रयास करता है।

" गुरुकुल-तपोमूलं, नूतन-नीति-पल्लवम् ।
ज्ञान-विज्ञान-योगेन, राष्ट्रं वर्धतु सर्वदा ||"

अर्थात मध्य प्रदेश में शिक्षा का विकास वैसा ही है जैसे एक विशाल पेड़, जिसकी जड़ें गुरुकुल के संस्कारों और तपस्या से जुड़ी हैं, और NEP 2020 जैसी नई नीतियां उसमे नए पत्तों की तरह विकास ला रही हैं | जब हमारा प्राचीन ज्ञान और आज का आधुनिक विज्ञान मिल जायेंगे, तभी हमारा राष्ट्र सही मायने में उन्नति करेगा|

मध्य प्रदेश के पाठ्यक्रमों में योग, आयुर्वेद के बुनियादी सिद्धांत, प्राचीन भारतीय गणितज्ञों (आर्यभट्ट, भास्कराचार्य) का योगदान और स्थानीय कलाओं को शामिल किया जा रहा है। सामाजिक विज्ञान में भारतीय इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

"संस्कार-कौशलं ज्ञानं, मातृभाषा-समन्वितम्।
अधुनातन-तन्त्रज्ञैः, भारतं विश्व-गुरुं कुरु॥"

अर्थात आधुनिक विद्यालयीन पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश हो जो नैतिक मूल्यों (वैल्यूज) और व्यावसायिक कुशलता (स्किल्स) के साथ ज्ञान प्रदान करे | जो हमारी मातृभाषा से जुड़ी हो और उसमे रची-बसी हो | जो आधुनिक तकनीक (मॉडर्न टेक्नोलॉजी) और विज्ञान से सुसज्जित हो | ऐसी शिक्षा नीति ही भारत को पुनः "विश्व गुरु" के पद पर स्थापित करेगी| यह श्लोक बताता है की NEP 2020 का उद्देश्य एक ऐसे भारतीय नागरिक को तैयार करना है जो अपनी जड़ो (रूट्स) से जुड़ा हो, लेकिन जिसके पास आधुनिक दुनिया (मॉडर्न वर्ल्ड) से लड़ने का सामर्

2. प्रस्तावना

" मध्यक्षेत्रे गवानीतिः शिक्षापद्धति-इतना ।
आधुनिके हि पाठ्येऽस्मिन् ज्ञान धारा सनातनी ।।"

मध्य प्रदेश में नई शिक्षा नीति और नवीन पठति लागू है । इस आधुनिक पाठ्यक्रम में सनातन ज्ञान की धारा प्रवाहित है, प्रस्तुत श्लोक मेरे शोथ विषय मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के सन्दर्भमें आधुनिक विद्यालयीन पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' की मूल भावना को अभिव्यक्त करता है। मध्य प्रदेश भारत का एक अग्रणी राज्य है जिसने विद्यालयीन स्तर पर इस नीति को लागू करने के लिए सकिय कदम उठाएं हैं।

" गुरुमुखात भुत्ता विद्या, आश्रमें संवर्धिता
संस्कारयुक्ता सा शिक्षा, राष्ट्रस्य गौखास्पदा ।।"

गुरु के मुख से सुनी गई विद्या, जो आश्रमों में विकसित हुई वह संस्कारयुक्त शिक्षा ही राष्ट्र के गौरव का आधार थी। प्राचीन काल में मध्य प्रदेश शिक्षा का प्रमुख केंद्र था, उज्जैन (अवंती) यह प्राचीन काल में भाषा विज्ञान, खगोल विज्ञान, ज्योतिष और कला का प्रमुख केंद्र था। यहाँ कालिदास जैसे विद्वानों की कर्मभूमि थी। सान्दीपनि आश्रम (उज्जैन): यह माना जाता है कि भगवान कृष्ण, बलराम और सुदामा ने यहाँ शिक्षा प्राप्त की थी, जो एक प्रमुख गुरूकुल था।बौद्ध मठ/विहार: साँची और धार (मांडू) के पास के क्षेत्र बौद्ध शिक्षा और दर्शन के केंद्र थे। नालंदा/तक्षशिला: यद्यपि ये मध्य प्रदेश के बाहर थे, प्राचीन काल में मालवा के विद्यार्थी इन प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा के लिए जाते थे। उज्जैन का महाकाल मंदिर और सान्दीपनि मुनि का आश्रम प्रमुख प्राचीन विद्या केंद्र थे।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक उत्थान का आधार स्तंभ होती है। भारत की ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम धरोहरों में से एक है, जिसने 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'सर्वे भवंतु सुखिनः' जैसे वैश्विक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। प्राचीन भारत में गुरुकुलों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से प्रदान की जाने वाली शिक्षा केवल सूचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास का मार्ग थी। किंतु, औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय शिक्षा व्यवस्था अपनी जड़ों से कटकर पश्चिमी सांचों में ढल गई, जिससे भावी पीढ़ियों में अपनी संस्कृति के प्रति बोध कम होता गया।

इस विसंगति को दूर करने के लिए भारत सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 एक ऐतिहासिक पुनर्जागरण के रूप में उभरी है। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems - IKS) को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ एकीकृत करने पर बल देती है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को 21वीं सदी के कौशल सिखाने के साथ-साथ उन्हें अपनी गौरवशाली विरासत से जोड़ना है।

मध्य प्रदेश, भारत के हृदय प्रदेश के रूप में, इस नीति के क्रियान्वयन में अग्रणी रहा है। राज्य सरकार ने विद्यालयीन पाठ्यक्रम में व्यापक परिवर्तन करते हुए स्थानीय संस्कृति, लोक-कला, वैदिक गणित, योग और आयुर्वेद जैसे विषयों को स्थान दिया है। मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा विकसित नवीन पाठ्यपुस्तकों में 'पंचकोश' विकास की अवधारणा को केंद्र में रखा गया है, जो छात्र के अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय कोष के शोधन पर आधारित है।

3. शोध के उद्देश्य

" मध्यक्षेत्र-प्रयत्नानां विश्लेषणं सुविस्तृतम्।
भारतीय-परम्पर्याः सिद्धि-बोधो हि उद्देश्यकम्॥"

मध्य प्रदेश राज्य के शैक्षणिक प्रयत्नों का विस्तृत विश्लेषण करना और भारतीय परंपरा की सफलता का बोध कराना ही इस शोध का उद्देश्य है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य मध्य प्रदेश के विद्यालयों में लागू इस नवीन पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। शोध के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा और प्राचीन भारतीय मूल्यों के बीच किस प्रकार का संतुलन स्थापित किया जा रहा है। साथ ही, यह अध्ययन क्रियान्वयन के स्तर पर आने वाली चुनौतियों, जैसे शिक्षकों का प्रशिक्षण और संसाधनों की उपलब्धता का

भी मूल्यांकन करता है। यह शोध न केवल शैक्षिक परिवर्तन की प्रक्रिया को स्पष्ट करेगा, बल्कि भविष्य के लिए एक सुदृढ़ मार्गदर्शिका प्रस्तुत करने का प्रयास भी करेगा।

- मध्य प्रदेश के विद्यालयीन पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख तत्वों की पहचान करना।
- NEP 2020 के दिशा-निर्देशों और वास्तविक कार्यान्वयन के बीच सामंजस्य का विश्लेषण करना।
- शिक्षकों और छात्रों के दृष्टिकोण से भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

4. शोध पद्धति

यह शोध मुख्य रूप से वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक (Descriptive & Analytical) पद्धति पर आधारित है।

- आंकड़ों के संग्रह के लिए प्राथमिक स्रोतों (प्रश्नावली और साक्षात्कार) और
- द्वितीयक स्रोतों (NCERT/SCERT की रिपोर्ट, NEP 2020 नीति दस्तावेज, शोध पत्र) का उपयोग किया गया है|

मुख्य शब्द (Keywords):

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,
- भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS),
- मध्य प्रदेश शिक्षा, विद्यालयीन पाठ्यक्रम, पंचकोश विकास, विश्लेषणात्मक अध्ययन।

5. पाठ्यक्रम विश्लेषण के मुख्य बिंदु

5.1 पाठ्यक्रम में समावेश के प्रमुख क्षेत्र

“ प्राचीनं च नवीनं च ज्ञानं यत्र मिलिष्यति।
तस्य पाठ्यक्रम-रूपस्य शोधनं मुख्य-लक्ष्यकम्॥”

जहाँ प्राचीन (भारतीय ज्ञान) और नवीन (आधुनिक विज्ञान) का मिलन होता है, उस पाठ्यक्रम के स्वरूप का भली-भाँति शोध करना ही इस अध्ययन का मुख्य लक्ष्य है। मध्य प्रदेश के पाठ्यक्रमों में योग, आयुर्वेद के बुनियादी सिद्धांत, प्राचीन भारतीय गणितज्ञों (आर्यभट्ट, भास्कराचार्य) का योगदान और स्थानीय कलाओं को शामिल किया जा रहा है। सामाजिक विज्ञान में भारतीय इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

5.2 क्रियान्वयन की स्थिति

*** पंचकोश का समावेश**

“ अन्नप्राणमनोबुद्धि-आनन्दैः पूर्णता भवेत्।
भारतीयपरम्पर्या छात्रो विश्वगुरुः पुनः॥
पंचकोश-प्रभावेन छात्र-विकास-मूल्यनम्।
शिक्षा-नीतेः प्रयोगस्य उद्देश्योऽयं निरूपितः॥”

अन्न, प्राण, मन, बुद्धि (विज्ञान) और आनंद (पंचकोश) के माध्यम से पूर्णता प्राप्त होती है। भारतीय परंपरा के इसी ज्ञान से छात्र पुनः 'विश्वगुरु' बनने की ओर अग्रसर है। पंचकोश (अन्नमय, प्राणमय आदि) के प्रभाव से छात्रों के विकास का मूल्यांकन करना ही इस शिक्षा नीति के प्रयोग (कार्यान्वयन) का मुख्य उद्देश्य बताया गया है।

*** नैतिक शिक्षा पर आधारित सामग्री का समावेश**

“ संस्कार-सहितं ज्ञानं विज्ञान-सम्मतं तथा।
अन्वेषणं हि तस्यैव शोध-कार्यस्य निश्चितम्॥”

संस्कारों से युक्त ज्ञान और विज्ञान पर आधारित शिक्षा के आपसी तालमेल की खोज करना ही इस शोध कार्य का निश्चित उद्देश्य है। मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा "विद्या भारती" और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के सहयोग से पाठ्यपुस्तकों में नैतिक शिक्षा पर आधारित सामग्री जोड़ी गई है।

5.3 ज्ञान और शोध की सार्थकता

"परम्परागतं ज्ञानं आधुनिके च मण्डले।
विश्लेषणेन सिद्धं हि शोधरूपं सुशोभनम्॥"

परंपरागत ज्ञान को आधुनिक परिवेश में विश्लेषण द्वारा सिद्ध करना ही एक सुंदर शोध का वास्तविक रूप है। आधुनिक विज्ञान और गणित के पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियों का एकीकरण प्रभाव और संभावनाएं एवं इसमें आयुर्वेद, प्राचीन खगोल विज्ञान (Astronomy) और वैदिक गणित को वर्तमान पाठ्यक्रम में शामिल करने के लाभों का विश्लेषण किया|

5.4 चुनौतियाँ

* आधुनिक शिक्षकों को प्राचीन ज्ञान प्रणालियों में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।
* प्राचीन ज्ञान को वैज्ञानिक तर्कों के साथ आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करना एक चुनौती है।
* पारंपरिक परीक्षाओं के माध्यम से नैतिक और मूल्य-आधारित शिक्षा का आकलन करना कठिन है।

6. सुझाव

- पाठ्यपुस्तकों में संस्कृत के सरल श्लोकों और स्थानीय लोक कथाओं का अधिक समावेश।
- शिक्षकों के लिए विशेष 'भारतीय ज्ञान परंपरा' कार्यशालाओं का आयोजन।
- प्रायोगिक शिक्षा (Experiential Learning) के माध्यम से छात्रों को ऐतिहासिक स्थलों और पारंपरिक उद्योगों से जोड़ना।

7. निष्कर्ष (

NEP 2020 यानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को स्वीकृत की गई एक व्यापक शिक्षा नीति है। इसका उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की जरूरतों के अनुसार बदलना और छात्रों को समग्र, लचीला और कौशल-आधारित शिक्षा प्रदान करना है

"कौशलं मातृभाषा च, समग्रं ज्ञान-दर्शनम्।
विंशत्युत्तर-द्विसहस्रे, नूतना नीति-रागता॥
अनुसन्धान-प्रकर्षेण, प्रज्ञा-शक्तिः प्रवर्धते।
भारतं विश्वगुरुत्वे, पुनः संस्थापयिष्यति॥"

यह नीति कौशल (Skills), मातृभाषा के प्रयोग और समग्र ज्ञान-दर्शन (Holistic Learning) पर बल देती है। वर्ष 2020 (विंशत्युत्तर-द्विसहस्रे) में इस नई शिक्षा नीति का आगमन हुआ। शोध (Research) और नवाचार की श्रेष्ठता से विद्यार्थियों की बुद्धि और शक्ति का विकास होगा। यह नीति भारत को पुनः 'विश्वगुरु' के पद पर प्रतिष्ठित करने का लक्ष्य रखती है।

निष्कर्षत मध्य प्रदेश में NEP 2020 के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश छात्रों को अपनी जड़ों से जोड़ने का एक साहसिक कदम है। यह न केवल छात्रों के बौद्धिक विकास में सहायक है, बल्कि उनमें आत्म-गौरव और राष्ट्रीयता की भावना भी जागृत करता है। यदि उचित प्रशिक्षण और संसाधनों का समन्वय हो, तो यह मॉडल भारत के भविष्य को 'विश्व गुरु' के रूप में पुनः स्थापित कर सकता है।

8.सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. एन.ई.पी.2020
2. THE GAZETTE OF INDIA Part III-Sec.4
2. शिक्षा मंत्रालय (2020): राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. NCTE (2019): एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) विनिमय, राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, भारत सरकार।
4. NCERT (2005): राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-2005), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
5. बत्रा दीनानाथ (2017) भारतीय शिक्षा का स्वरुप |
6. पाण्डेय रामशकल (2007) शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रिय पृष्ठभूमि |
7. राजपूत जगमोहन सिंह , दीक्षित राजेंद्र (2017) शिक्षा में मूल्यों के सरोकार |
8. करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर क्वालिटी टीचर एडुकेशन , 1996 नेशनल काउन्सिल फॉर टीचर एडुकेशन, नई दिल्ली |
9. कोठारी डी.एस. (2000) एडुकेशन एंड केरेक्टर बिल्डिंग नई दिल्ली |